बुटवल-नेपाल। आध्यात्मिक भेटघाट कार्यक्रम में नेपाल के उप प्रधानमंत्री एवं अर्थ मंत्री विष्णु प्रसाद पौडेल को गुलदस्ता देकर बधाई देते हुए ब्र.कु. नारायण। साथ हैं प्रमुख जिला अधिकारी विष्णु प्रसाद ढ़काल एवं अन्य विशिष्ट जन।

नागौर-राज.। किसान सशक्तिकरण अभियान कार्यक्रम के पश्चात् अतिरिक्त जिला कलेक्टर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनीता व ब्र.कु. बसन्ती।

हाथरस-उ.प्र.। 'मेरा भारत व्यसन मुक्त भारत अभियान' के तहत बागला महाविद्यालय में 'विश्व कैंसर दिवस' पर एन.एस.एस. के युवाओं के लिए आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. शान्ता, राष्ट्रीय सेवायोजना शिविर संचालक डॉ. साहब सिंह, ब्र.कु. कुसुम व बागला कॉलेज के पूर्व लाइब्रेरियन जे.पी. शर्मा। व्यसन का त्याग करते एन.एस.एस. के युवा विद्यार्थी।

सादुलशहर-राज.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में लालचंद भादू,पूर्व न्यायाधीश,छ.ग. एवं पूर्व लोकायुक्त,छ.ग., ब्र.कु. माधवी व अन्य।

फाज़िलनगर-उ.प्र.। सेवाकेन्द्र में आने पर शिक्षकों को ईश्वरीय संदेश देने के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. भारती, ब्र.कु. प्रीति, ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. सूरज, रामप्रसाद श्रीवास्तव, बैरिस्टर जैसवाल, राजेन्द्र यादव व अन्य।

समस्तीपुर-बिहार। विश्व शांति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए डी.एम. प्रणव कुमार। साथ हैं बायें से दायें बिहार इंडस्ट्रीज़ एसोसिएशन के पूर्व उपाध्यक्ष रामगोपाल सुरेका, अरुणाचल प्रदेश के पूर्व योजना अधिकारी एस.पी. वर्मा, ब्र.कु. अरुणा, आई.एम.ए. के पूर्व अध्यक्ष डॉ. डी.के. मिश्रा, सुधा डेयरी के एम.डी. डी.के. श्रीवास्तव एवं ब्र.कु. कृष्ण।

राउरकेला-ओडिशा। नवनिर्मित सेवाकेन्द्र का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी। साथ हैं ब्र.कु. हंसा, ब्र.कु. विमला, ब्र.कु. श्वेता, ब्र.कु. विभूति,माउण्ट आबू व अन्य। उद्घाटन के साथ दादी जानकी के 100वें जन्म दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं दादी जानकी, ब्र.कु. विमला, ब्र.कु. रानी, ब्र.कु. पार्बती, ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. हंसा व अन्य।

अपने को सराबोर कर दें परमात्मा के रंग में

हमारी ज़िन्दगी में रंगों का बहुत महत्व है। खाना भी कलरफुल, पीना भी कलरफुल, पहनना भी कलरफुल और जीना भी कलरफुल। इसलिए आप देखें कि लोग बातचीत में एक-दूसरे का मज़ा लेते हुए कहते हैं कि भाई साहब तो बड़े रंगीन मिज़ाज हैं। कहने का भाव यह है कि हमारे जीवन में रंगीनियों का बड़ा महत्व है। हमको हर समय रंगीनियाँ ही चाहिए। इसी की शायद हमको तलाश रहती है। इसके तह तक हम आपको ले चलेंगे, क्योंकि इसका एक बहुत बड़ा वैज्ञानिक कारण है। ऐसे ही नहीं हम रंगीन चीज़ें देख लेते हैं या रंगीन कपड़े पहन लेते हैं! कुछ तो है जो हमें इसकी ओर खींचता है।

अगर हम वैज्ञानिक तरीके से इस बात को समझना चाहें तो सबसे पहले हमें अपने मन को समझना है। जिस प्रकार से कम्प्यूटर की भाषा या यूं कहें कि कम्प्यूटर अपने हरेक चीज़ को बाईनरी भाषा (01) में रूपांतरित (convert)करके समझता है। ठीक उसी प्रकार हमारा मन बिल्कुल कम्प्यूटर के समान ही है। यदि हम अपने मन को एक कम्प्यूटर स्क्रीन की तरह देखें और उसके इनपुट डिवाइस के रूप में अपने पंच इंद्रियों को देखें तो, जो कुछ भी हम देखते हैं या सुनते हैं या सोचते हैं या महसूस करते हैं, तो ये सबकुछ हमारे मन के पर्दे पर चार तरह से आता है। जिसमें पहला चित्र, दूसरा रंग, तीसरा ध्वनि या संगीत और चौथा कला और कलाकृति के रूप में हमारे मन के पर्दे पर बार-बार उभरता है। इसलिए आप देखो कि हमको पढ़ी हुई चीज़ भूल जाती है, लेकिन देखी हुई चीज़ या सुनी हुई चीज़ या महसूस की हुई चीज़ें हमेशा याद रहती हैं। कारण कि हमारा मन हमेशा चित्र और रंगों को ही देखता और समझता है, इसलिए छोटे बच्चों को नर्सरी आदि में कलरफुल चित्र दिखाकर पढ़ाई की शुरुआत करते हैं। क्योंकि बच्चों को अंक या फिर लिखावट समझ नहीं आती, उन्हें चित्र समझ में आते हैं। आप भी जब उदास होते हैं तो कहते हैं कि चलो कोई मूवी देख आते हैं, कहीं घूम के आते हैं तो वहाँ तो कोई आप नॉवेल पढ़ने या कोई स्ट्डी करने नहीं जाते, आप वहाँ घूमने जाते हैं और घूमने में आप सीन-सीनरी ही तो देखते हैं। भावार्थ यह हुआ कि हर जगह हम चाहे वैदिक काल से ही लें तो भी ऋषि-मुनी गुरुकुल में अपने शिष्यों को पढ़ाने के लिए कोई कागज़ और कलम का इस्तेमाल नहीं करते थे, उन्हें केवल दृश्य दिखाते थे। उपरोक्त बातों में तो बात हो गई वैज्ञानिक तथ्यों की कि हम चित्र क्यों देखते हैं। अब बात आ गई है कि हम क्या देखें और क्यों देखें। आपको हम बताना चाहेंगे कि प्रत्येक चित्र, प्रत्येक रंग के अंदर एक ऊर्जा होती है और वो ऊर्जा बहुत तीव्रता से हमारे मन को प्रभावित करती है। आज हम दिन-रात गन्दे चित्र, गन्दे दृश्यों का हमेशा अवलोकन करते रहते हैं और ये चित्र जितनी बार हम देखते हैं, उतनी बार हम नकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करते हैं। बात है हमें या हमारे मन को ट्रेनिंग देने की, इसीलिए शायद भक्तिमार्ग में जो गीत बने, उन गीतों में भी यही था कि हे परमात्मा मुझे अपने रंग में रंग दो, मुझे ज्ञान के रंग में, प्रेम के रंग में रंग दो, सांवरिया, गेरुआ रंगों रूपी रूपक के आधार से हम परमात्मा से जुड़ने का प्रयास करते थे।

अब बात आ गई है कि हम क्या देखें और क्यों देखें। आपको हम बताना चाहेंगे कि प्रत्येक चित्र, प्रत्येक रंग के अंदर एक ऊर्जा होती है और वो ऊर्जा बहुत तीव्रता से हमारे मन को प्रभावित करती है, और ये चित्र जितनी बार हम देखते हैं, उतनी बार हम नकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करते हैं। बात है हमें या हमारे मन को ट्रेनिंग देने की, इसीलिए शायद भक्तिमार्ग में जी गीत बने, उन गीतों में था कि हे परमात्मा मुझे अपने रंग में रंग दो।

तो होली का त्योहार इसी का व्यवहारिक रूप है, जिसमें परमात्मा कहते कि तुम मेरे रंग में रंग के अपने आपको पवित्र बनाओ। आप देखिये, यदि हम कलरफुल कपड़े पहनें तो कुछ दिन में हम बोर हो जाते हैं, लेकिन यदि श्वेत वस्त्र पहनें तो हमें बोरीयत नहीं महसूस होती। कारण है कि सफेद रंग कोई रंग नहीं है, ये सात रंगों का एक समूह है। यदि सभी सात रंगों को एक अनुपात में मिलाकर घुमा दिया जाए तो वो श्वेत रंग बन जाता है। वैसे ही सात रंग सातों गुणों के साथ जुड़े हुए हैं और परमात्मा इन सातों रंगों का सागर है। बस वही सात रंग हमारे अंदर भी हैं जिनसे हमारी आत्मा बनी हुई है। आज हमारी आत्मा का रंग धूमिल पड़ गया है, अर्थात् उसके अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, आलस्य, भय रूपी गंदे रंग या चित्र भर गये हैं। इन गंदे चित्रों को निकालने हेतु हमें अपने आपको परमात्मा के रंग से रंगना होगा, पवित्र बनाना होगा, तभी जाकर हमारे अंदर वो सारे रंग जो परमात्मा के हैं, वो सब आ जायेंगे और हम भी लोगों को परमात्मा की तरह दिखने लग जायेंगे। इस होली पर हम सभी को उस परमात्म रंग में रंगने के लिए खुद को दृढ़ प्रतिज्ञ बनाना होगा। अपने आपको बार-बार याद दिलाना होगा कि होली पवित्र बनने का एक संकल्प है, एक एहसास है। इस होली में हम परमात्मा के होकर ही रहेंगे।